विवा मेक्सिको!

बेनिटो जुआरेज़

अर्जेंटीना पलासियोस

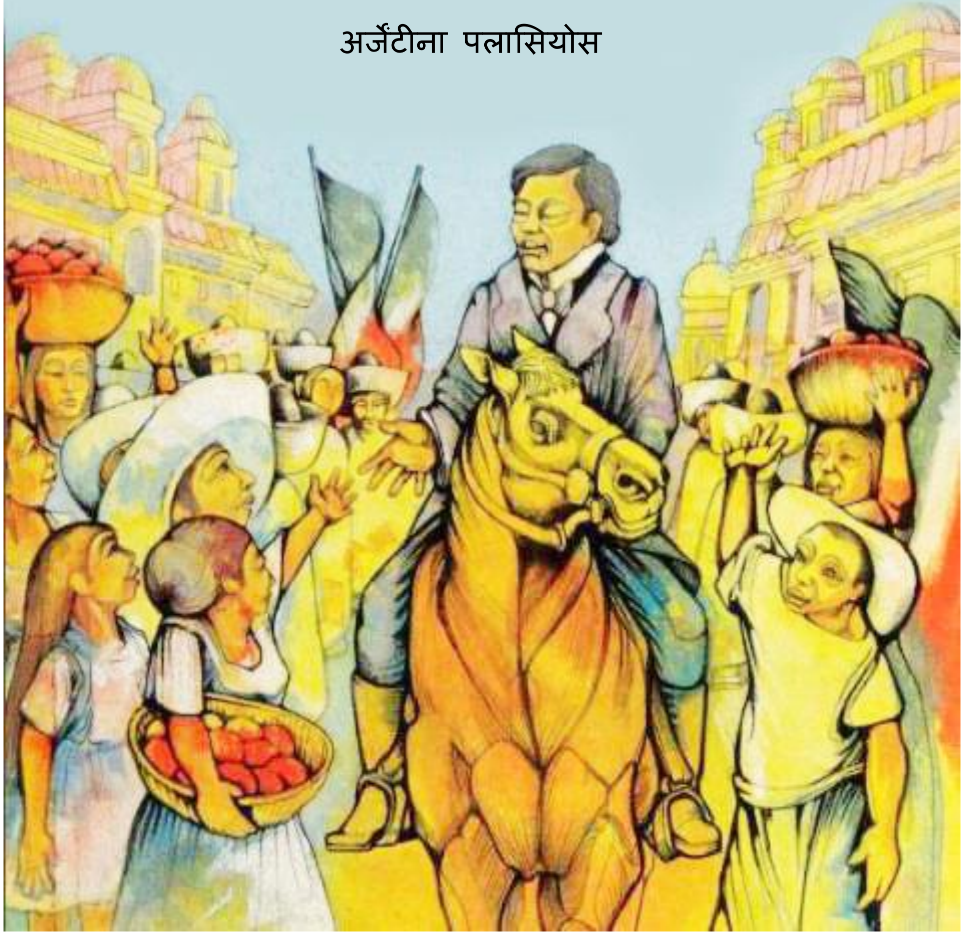

मेक्सिको की पहाड़ियों में ऊँचाई पर एक छोटा, धूप में पकी ईंटों का एक घर था. उसका फर्श गंदा था, और घर में लगभग कोई फर्नीचर नहीं था. वो एक गरीब गांव में एक गरीब आदमी का घर था.

दो कमरों के इस मकान में से एक में, जोसेफा और रोजा जुआरेज इंतजार कर रही थीं. दोनों लड़कियों को पता था कि दिन के अंत तक उनका एक नया भाई या बहन पैदा होगा. वे बच्चे की पहली रोने की आवाज सुनने के लिए चुपचाप इंतजार कर रहीं थीं. बच्चा इतना समय क्यों ले रहा था?

तभी जोसेफा और रोजा ने एक फीकी चीख सुनी. बच्चा! वे मम्मा के कमरे में पहुंचे. गर्व से माँ ने उन्हें उनका नया भाई दिखाया. वो कितना छोटा था!

उसकी आँखें कसकर बंद थीं. और जब वे खुलतीं, तो वे लड़कियों की आँखों की तरह ही गहरे भूरे रंग की लगती थीं.

माँ और पापा ने बच्चे को बेनिटो बुलाया. उन्होंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि एक दिन उनके बेटे का नाम पूरा मेक्सिको जानेगा.

हालांकि बेनिटो के परिवार ने उसे ढेर सारा प्यार दिया, लेकिन परिवार के पास उसे देने के लिए उसके अलावा और कुछ था भी नहीं.

जुआरेज परिवार, अपने पड़ोसियों की तरह, जैपोटेक इंडियंस थे. बहुत कम जैपोटेक ही मेक्सिको की मुख्य भाषा स्पेनिश बोलते थे. उनमें से बहुत कम लिखे-पढ़े थे. जैपोटेक इतने गरीब थे कि उनके गाँव में कोई स्कूल तक नहीं था.

जब बेनिटो केवल तीन वर्ष के था, तब उसका जीवन एकदम बदल गया. उसके दोनों माता-पिता की मृत्यु हो गई. फिर उसके दादा-दादी, जुआरेज बच्चों को अपने साथ ले गए. आठ साल तक उन्होंने बच्चों को पाला. लेकिन जब बेनिटो ग्यारह साल का हुआ, तब उसके दादा-दादी की भी मृत्यु हो गई. इसलिए वो अपने चाचा बर्नार्डिनो के साथ रहने के लिए पास के ही एक गाँव में चला गया.

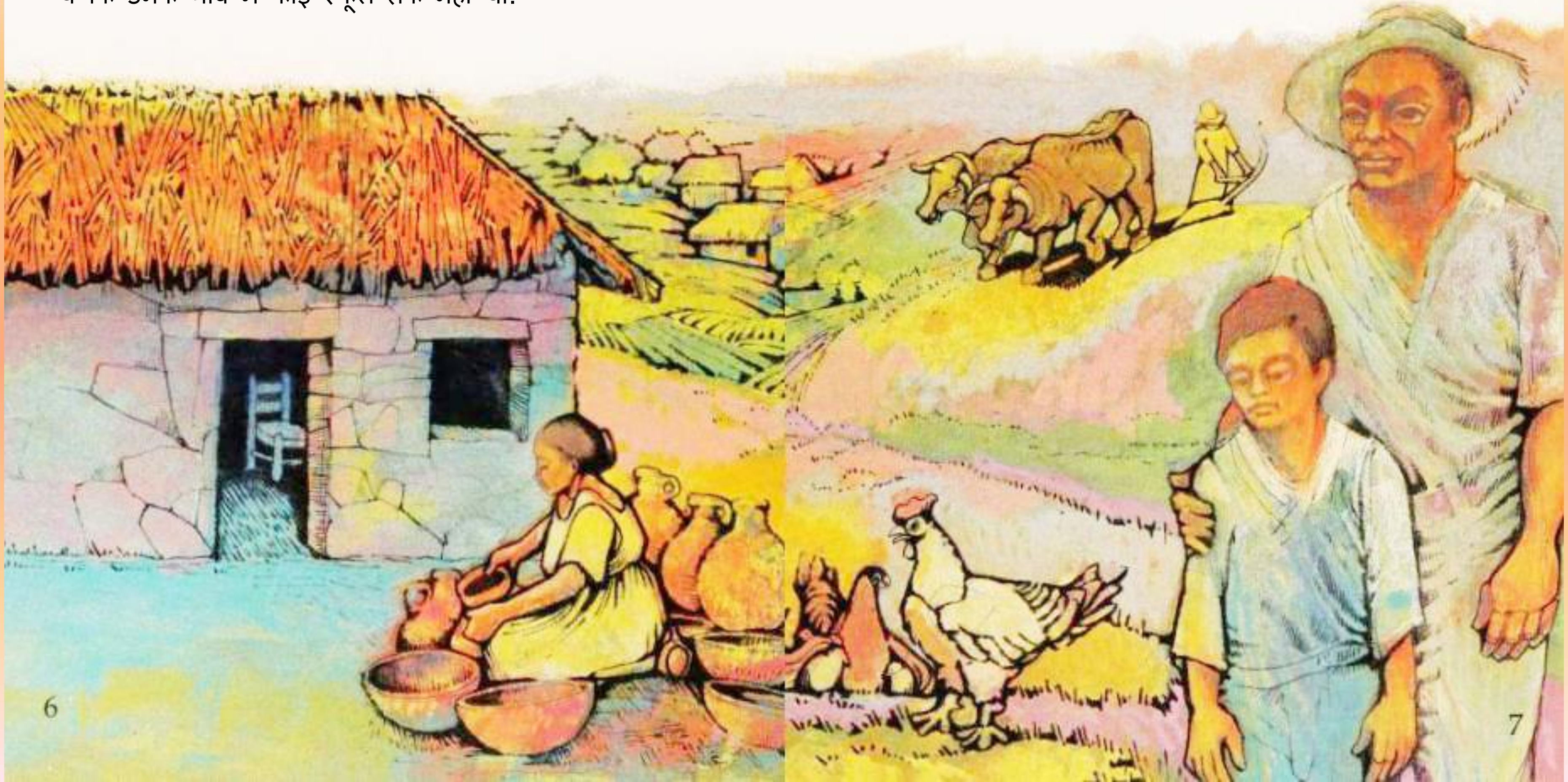

एक दोपहर, बेनिटो के चाचा बर्नार्डिनो के घर के पास के खेत में खड़ा था. उसके चारों ओर भेड़ें घास चर रही थीं. बेनिटो का काम चाचा की भेड़ों की रखवाली करना था.

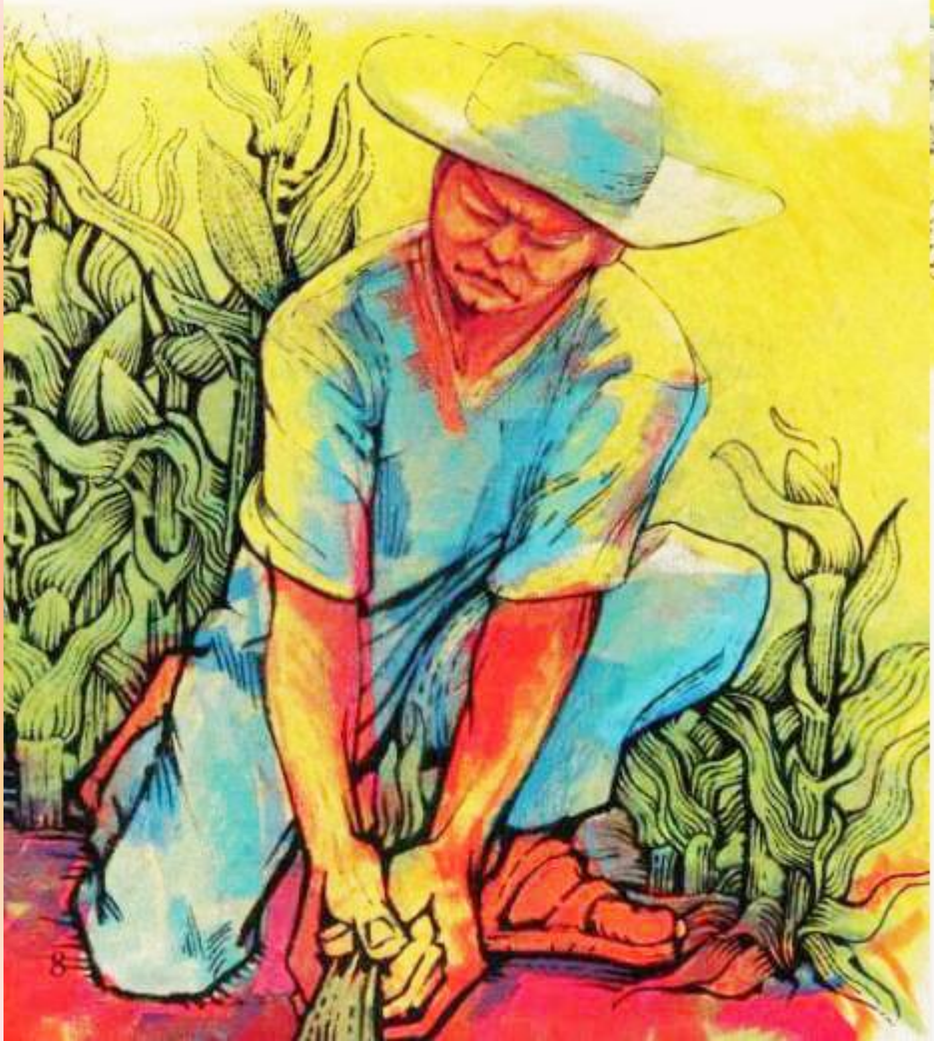

बेनिटो ने मक्का के खेत की ओर देखा. मक्के के पौधे ऊंचे थे. बेनिटो ने चाचा बर्नार्डिनो को, मक्का के खेत में खरपत निकालते हुए देखा. वो एक कठिन काम था. जल्द ही बेनिटो खरपत खींचने में अपने चाचा की मदद कर रहा था.

बा-आ, एक भेड़ रोई. बेनिटो झुंड को देखने के लिए पीछे मुड़ा. वो जानता था कि उसे भेड़ों पर अपनी नजर रखनी चाहिए थी ताकि उनमें से कोई भटक न जाए.

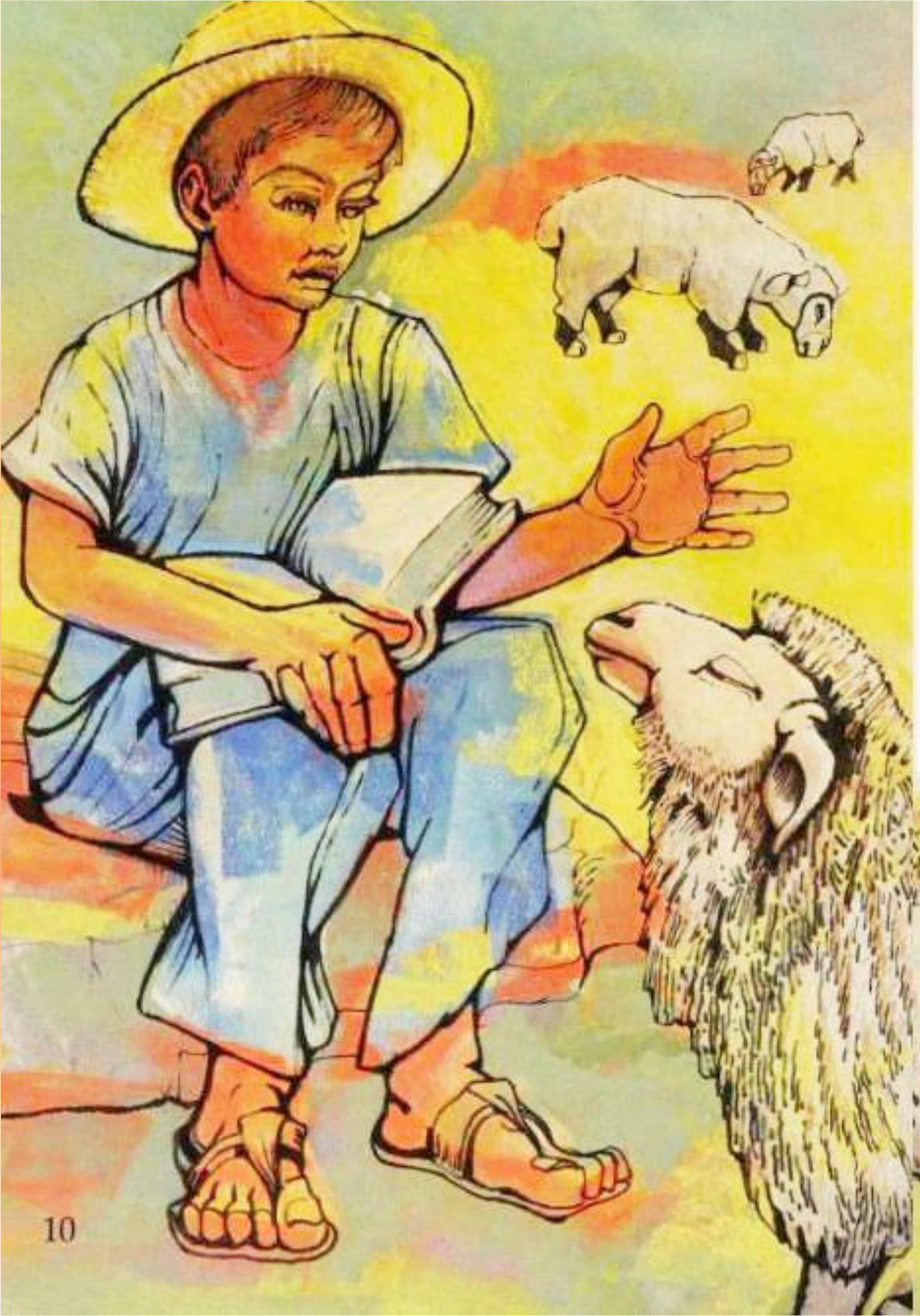

बेनिटो की इच्छा थी कि उसके चाचा मैदान में आएं और उसके साथ बैठें. तब चाचा बर्नार्डिनो उसे अच्छी तरह से पढ़ना सिखा सकते थे. चाचा बर्नार्डिनो पढ़ना जानते थे, और वे चाहते थे कि बेनिटो भी पढ़ना सीखें. इसलिए, उन्हें जब भी समय मिलता तब चाचा बर्नार्डिनो, बेनिटो को पढ़ाते थे.

बेनिटो को सीखना बहुत पसंद था. लेकिन दिन भर उसे खेती का काम करना होता था. चाचा बर्नार्डिनो को पढ़ाने के लिए बहुत कम समय मिलता था.

फिर बेनिटो ने दिखावा किया कि वो एक शिक्षक था. उसने भेड़ों को वो सिखाया जो वो खुद जानता था. कभी-कभी भेड़ें सिर उठाकर बेनिटो को देखती थीं. आह, एक काबिल छात्र! लेकिन फिर से भेड़ अपना झुकाकर घास चरने लगती थी.

जल्द ही बेनिटो ने वो सब सीख लिया जो चाचा बर्नार्डिनो उसे सिखा सकते थे. अधिक सीखने के लिए, उसे स्कूल जाना होगा. लेकिन निकटतम स्कूल ओक्साका शहर में था. और वो उसके गाँव से चालीस मील दूर था.

तब बेनिटो ने अपनी बहन जोसेफा के बारे में सोचा. वो अब ओक्साका में काम करती थी. वो वहां अपनी बहन के साथ रह सकता था. उसे पता था कि वो कठिन होगा, लेकिन उसने अपने चाचा का घर छोड़ने का फैसला किया. उसके स्कूल में पढ़ने का यही एकमात्र रास्ता था.

फिर वो बिना घोड़े या सवारी के शहर के लिए निकल पड़ा. उसके पास केवल उसके मजबूत पैर थे.

बेनिटो मीलों चट्टानी खेतों और धूल भरी सड़कों पर चला. वो थका और भूखा था. लेकिन वो चलता रहा. अंत में, उसने दूर से ओक्साका शहर को देखा.

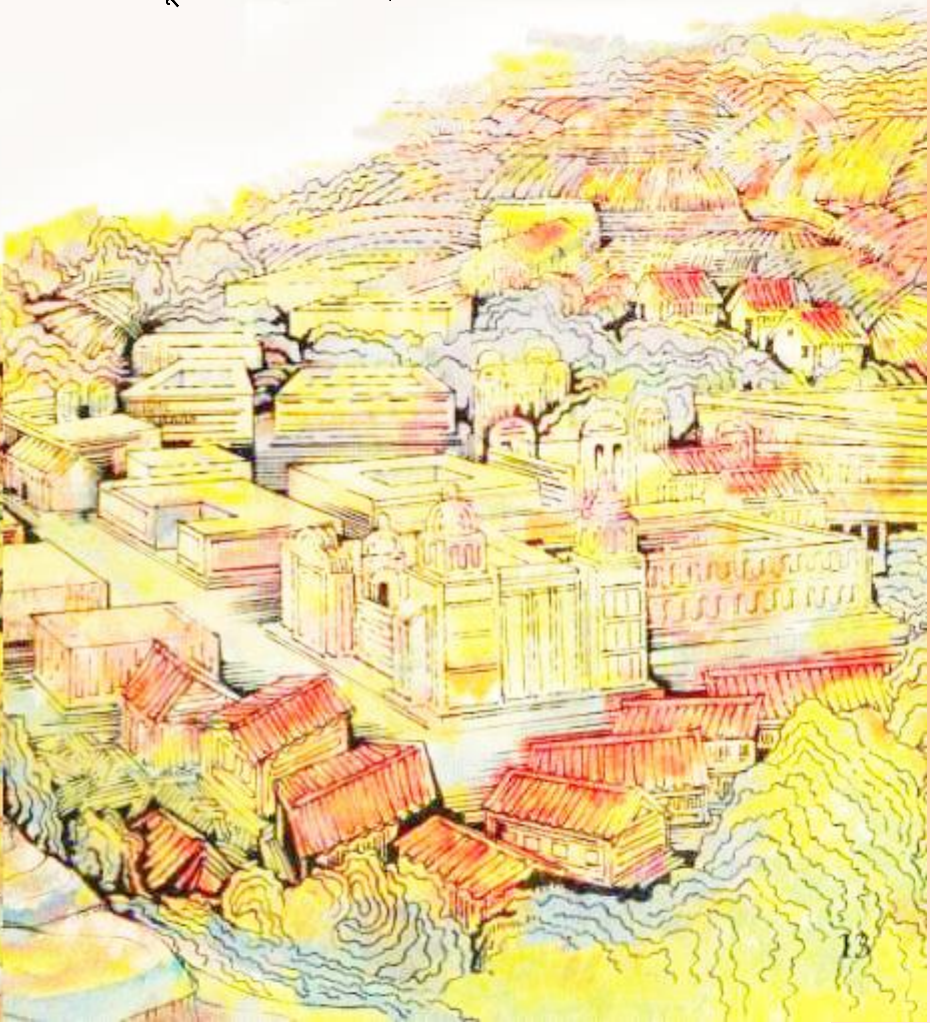

ओक्साका को पहली बार देखने पर बेनिटो चकित रह गया. उसके 150 लोगों के छोटे से गांव की तुलना में वो एक बहुत बड़ा शहर था! हर तरफ बड़ी-बड़ी इमारतें थीं. कुछ दो मंजिल ऊंची थीं, कुछ तीन मंजिली, या उससे भी ऊंची!

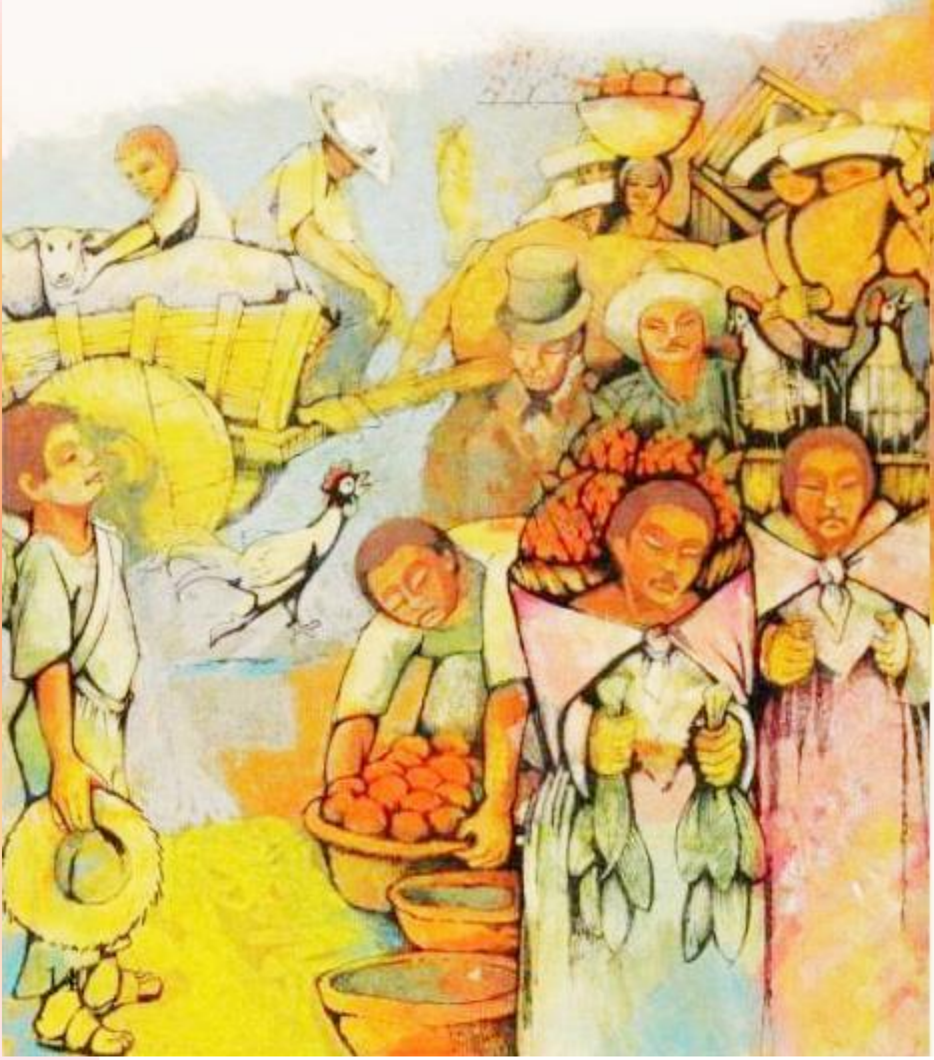

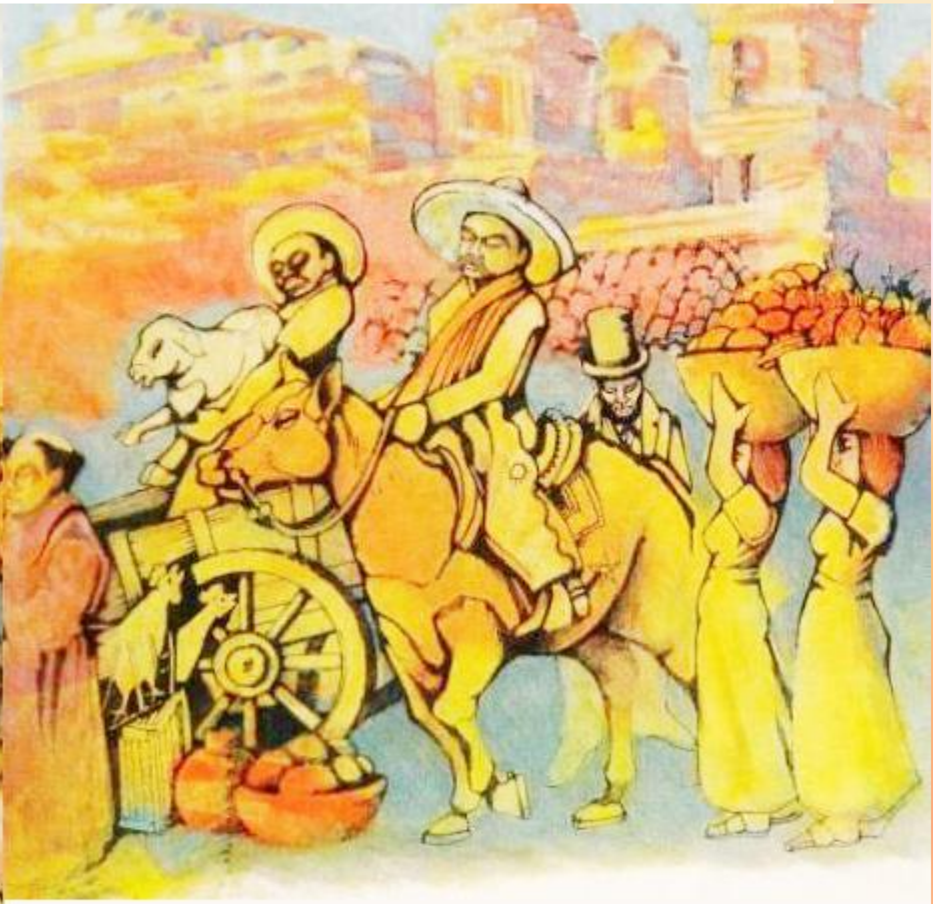

और भीड़! बेनिटो को भीड़ पर विश्वास नहीं हुआ. गलियां लोगों से खचाखच भरी थीं. लोग चल रहे हैं, लोग दौड़ रहे हैं, लोग गाड़ियों में बैठे थे, और लोग घोड़े पर सवार थे. उसने सोचा था कि पूरी दुनिया में भी इतने सारे लोग नहीं होंगे. पर वे सभी वहां एक ही शहर में थे.

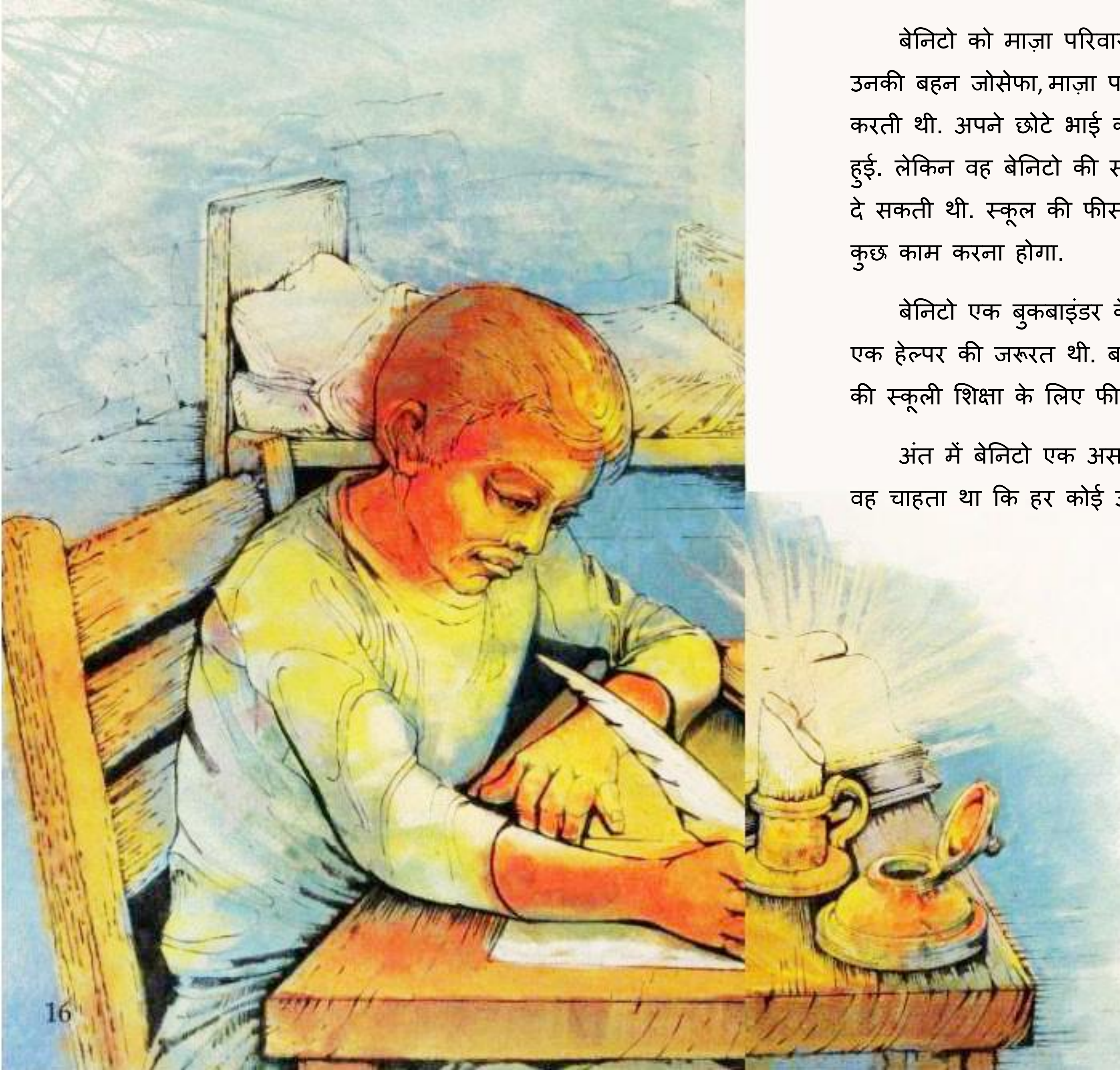

बेनिटो को माज़ा परिवार के घर का रास्ता मिल गया. उनकी बहन जोसेफा, माज़ा परिवार में एक रसोइए का काम करती थी. अपने छोटे भाई को देखकर जोसेफा बहुत खुश हुई. लेकिन वह बेनिटो की स्कूली शिक्षा के लिए फीस नहीं दे सकती थी. स्कूल की फीस भरने के लिए बेनिटो को कुछ काम करना होगा.

बेनिटो एक बुकबाइंडर के लिए काम करने लगा, जिसे एक हेल्पर की जरूरत थी. बदले में, बुकबाइंडर ने बेनिटो की स्कूली शिक्षा के लिए फीस दी.

अंत में बेनिटो एक असली स्कूल में पढ़ने जा सका. वह चाहता था कि हर कोई उसके जैसा भाग्यशाली हो.

बेनिटो कई सालों तक स्कूल गया. उसने खुद भी पढ़ाई की. उसने पढ़ना, लिखना, इतिहास, विज्ञान और यहां तक कि कानून भी सीखा. 1831 में, वो एक वकील बन गया. तब वो 25 साल का था.

एक वकील के रूप में, वो अक्सर उन गरीब लोगों के मामले लेता था जो उसकी फीस नहीं दे पाते थे. उसके मुवक्किल जानते थे कि वे बेनिटो जुआरेज़ पर सबसे अच्छी मदद के लिए भरोसा कर सकते हैं.

लेकिन बेनिटो जुआरेज और भी लोगों की मदद करना चाहता था. एक वकील के रूप में वैसा करना मुश्किल था. इसलिए उसने सरकार में काम करने का फैसला किया.

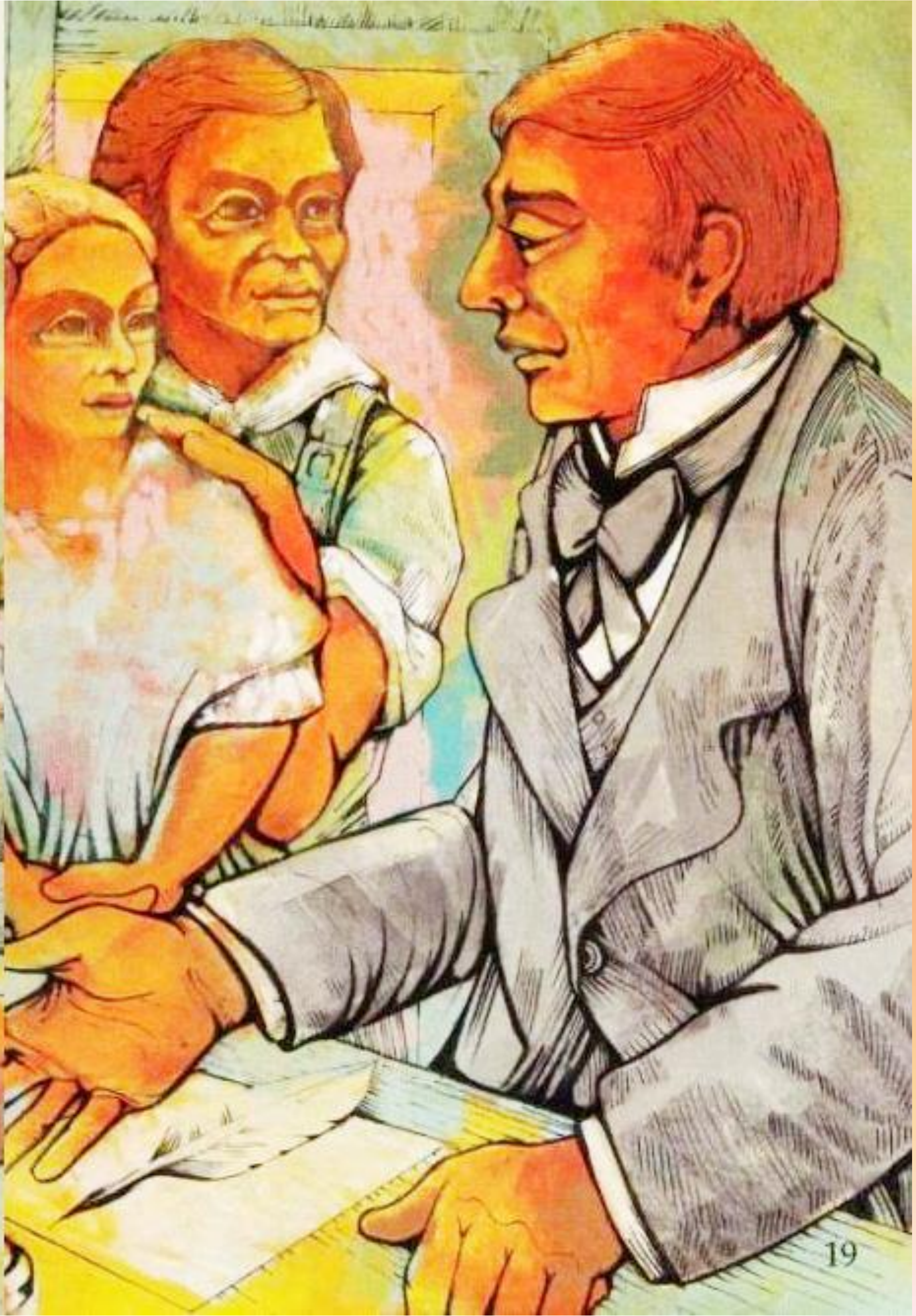

बेनिटो जुआरेज़ को ओक्साका राज्य में कई सरकारी पदों के लिए चुना गया. अंत में, वे राज्य के राज्यपाल (गवर्नर) बने.

वो चाहते थे कि सभी बच्चों को पढ़ने का मौका मिले. इसलिए, उन्होंने अपने जैसे गरीब गांवों में, चालीस से अधिक स्कूल खोलने में मदद की.

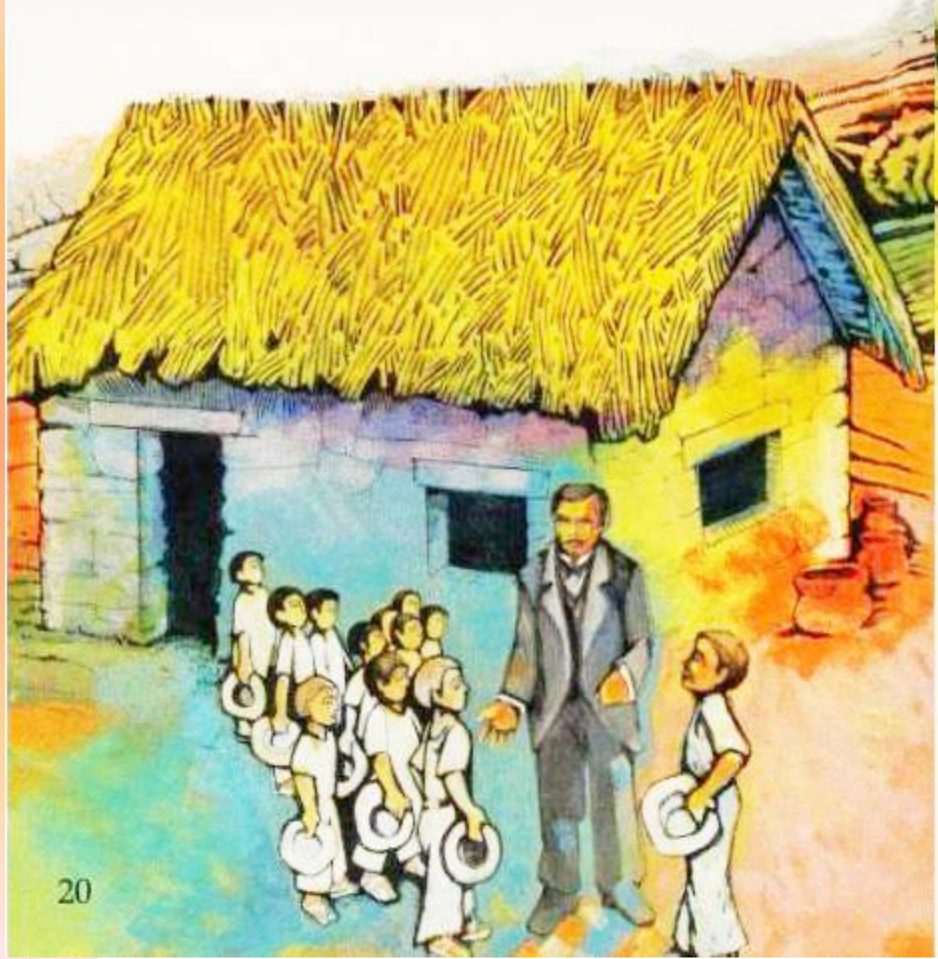

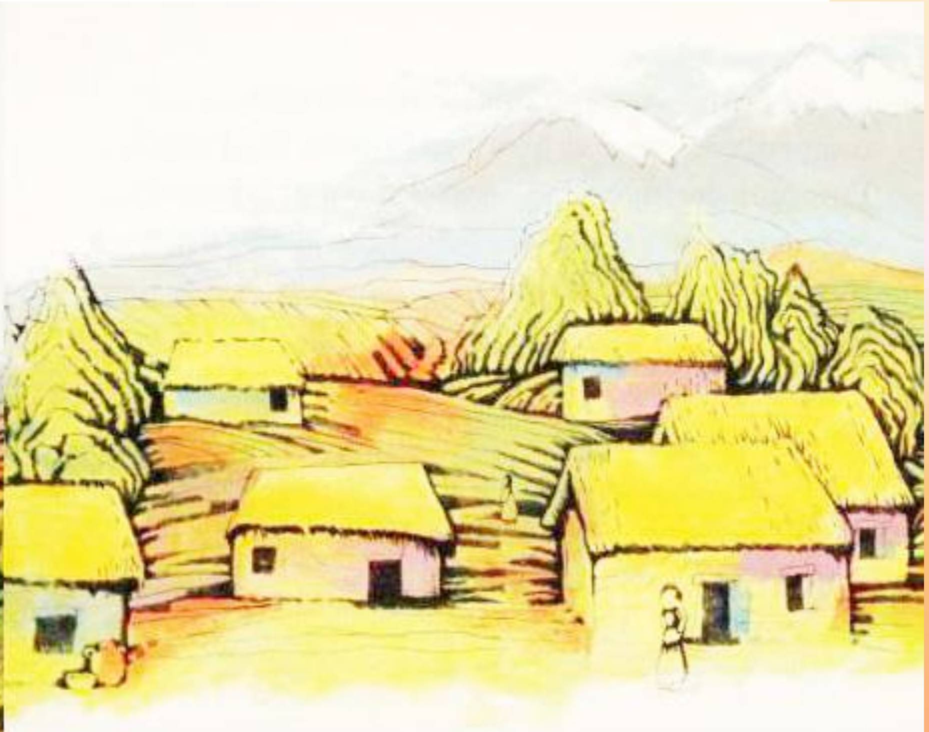

जुआरेज ने ओक्साका के लोगों के लिए बहुत कुछ किया. वो विशेष रूप से ओक्साका में स्थानीय इंडियंस की मदद करना चाहते थे. "मैं एक इंडियन हूं और मैं अपने लोगों को भूल नहीं सकता हूँ," उन्होंने कहा.

कई लोगों ने देखा कि बेनिटो जुआरेज एक अच्छे गवर्नर थे. इसलिए लोगों ने तय किया कि वो मेक्सिको के लिए एक अच्छे राष्ट्रपति भी बनेंगे. 1861 में बेनिटो जुआरेज, मेक्सिको के राष्ट्रपति बने.

लेकिन जुआरेज खतरनाक समय में राष्ट्रपति बने. बहुत दूर, फ्रांस के सम्राट ने मेक्सिको पर कब्जा करने फैसला किया. उसने मैक्सिकन लोगों से लड़ने के लिए समुद्र के पार अपने सैनिकों को भेजा. वो 1862 का साल था.

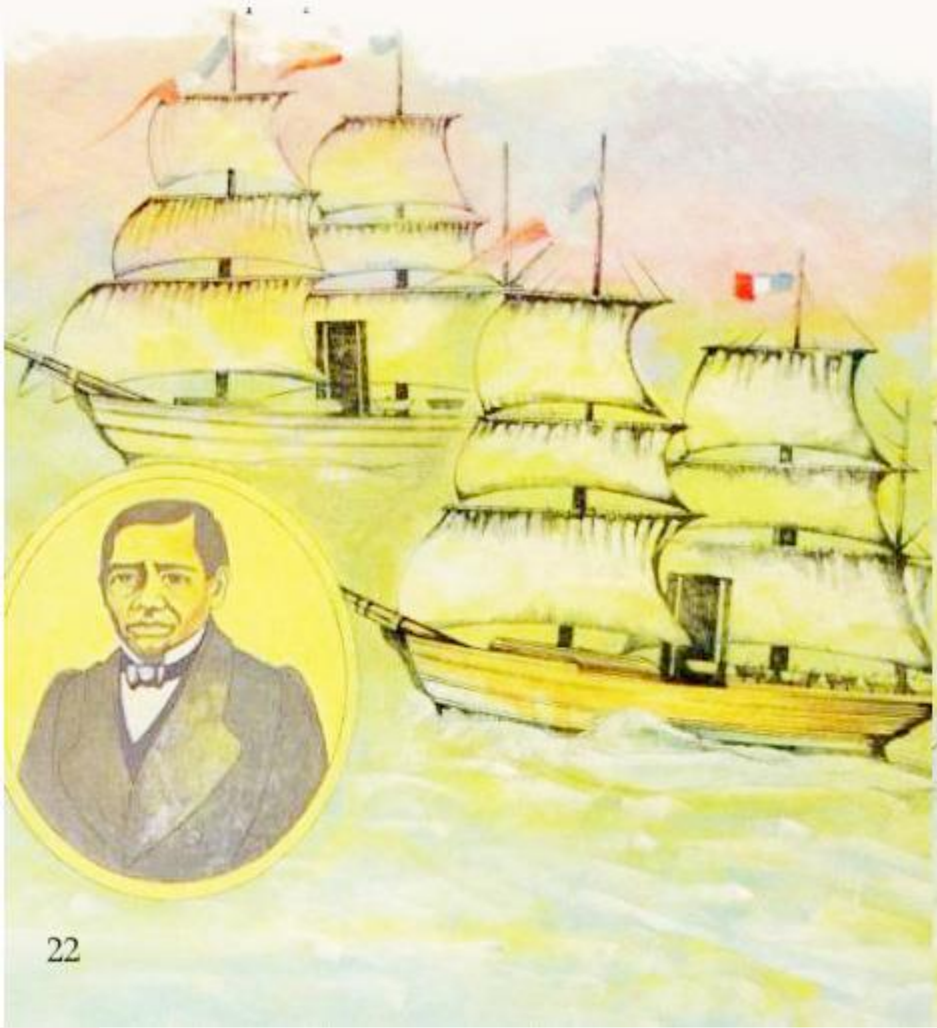

फ्रांसीसी सैनिकों को लगा कि वे मेक्सिको को आसानी से पराजित कर लेंगे. फ्रांसीसी सैनिकों को यकीन था कि वे मैक्सिकन सैनिकों से कहीं ज्यादा ताकतवर थे.

मेक्सिकन लोगों को यह खबर मिली कि फ्रांसीसी सेना मेक्सिको से होकर जा रही है. फिर मेक्सिकन लोगों ने पहाड़ियों की ऊंचाई पर, फ्रांसीसी सैनिकों की प्रतीक्षा की.

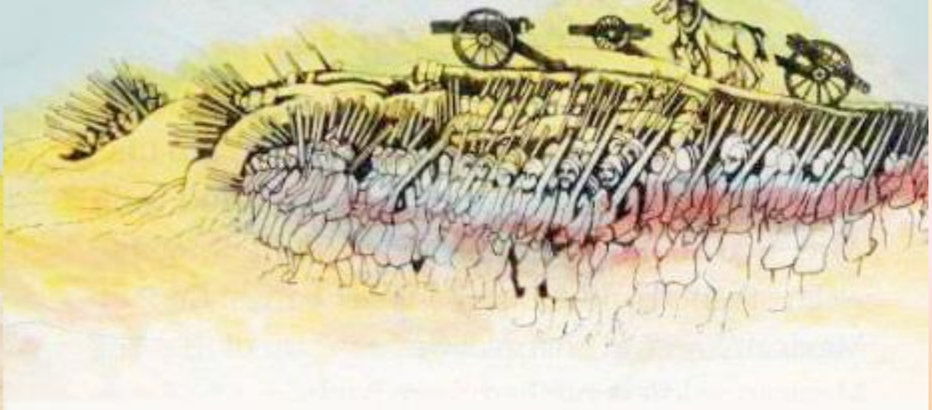

सिन्को डे मेयो- 5 मई की सुबह-मैक्सिकन लोगों ने फ्रांसीसी सैनिकों को पुएब्ला शहर में पहुंचते हुए देखा.

उन्होंने हजारों फ्रांसीसी सैनिकों को घोड़े पर सवार देखा. हजारों को पैदल मार्च करते देखा. सैनिकों की राइफलें कांटेदार कांटों के जंगल जैसी ऊपर उठी थीं. ऊबड़-खाबड़ जमीन पर घोड़े विशाल, भारी तोपें खींच रहे थे.

उनके पास कितने सारे हथियार थे और उनके कितने ज़्यादा सैनिक थे!

मेक्सिकन लोग जानते थे कि फ्रांसीसियों के पास एक मजबूत सेना थी. लेकिन फ्रांसीसी सैनिक अपनी लंबे यात्रा के बाद थके हुए लग रहे थे. फिर मेक्सिकोवासियों को लगा कि वो जीत सकते थे.

दोनों सेनाएं लड़ने के लिए तैयार हुईं.

दोपहर करीब दो बजे लड़ाई शुरू हुई. फ्रांसीसियों ने सोचा कि लड़ाई जल्द ही खत्म हो जाएगी. लेकिन उन्हें तब बहुत आश्चर्य हुआ जब मेक्सिकन लोगों ने कड़ी मेहनत करके अच्छी तरह लड़ाई लड़ी. दो घंटे के बाद, मेक्सिकन सेना अभी भी लड़ रही थी.

फ्रांसीसी सैनिकों ने मैक्सिकन लाइन में एक कमजोर हिस्सा देखा और चार्ज किया. लेकिन मैक्सिकन सैनिकों के एक समूह ने उन्हें पीछे धकेल दिया.

दोपहर तक, फ्रांसीसी सेना की बंदूकों की गोलियों और तोप के गोले ख़त्म होने लगे. दोनों पक्षों के कई सैनिक मारे गए या घायल हुए. अंत में, फ्रांसीसी भाग गए.

मैक्सिकन जीत गए. विवा! (चिरायु) मेक्सिको! अब उन्हें पता था कि वे शक्तिशाली थे. अब उन्हें पता थे कि वो फ्रांसीसियों को हरा सकते थे.

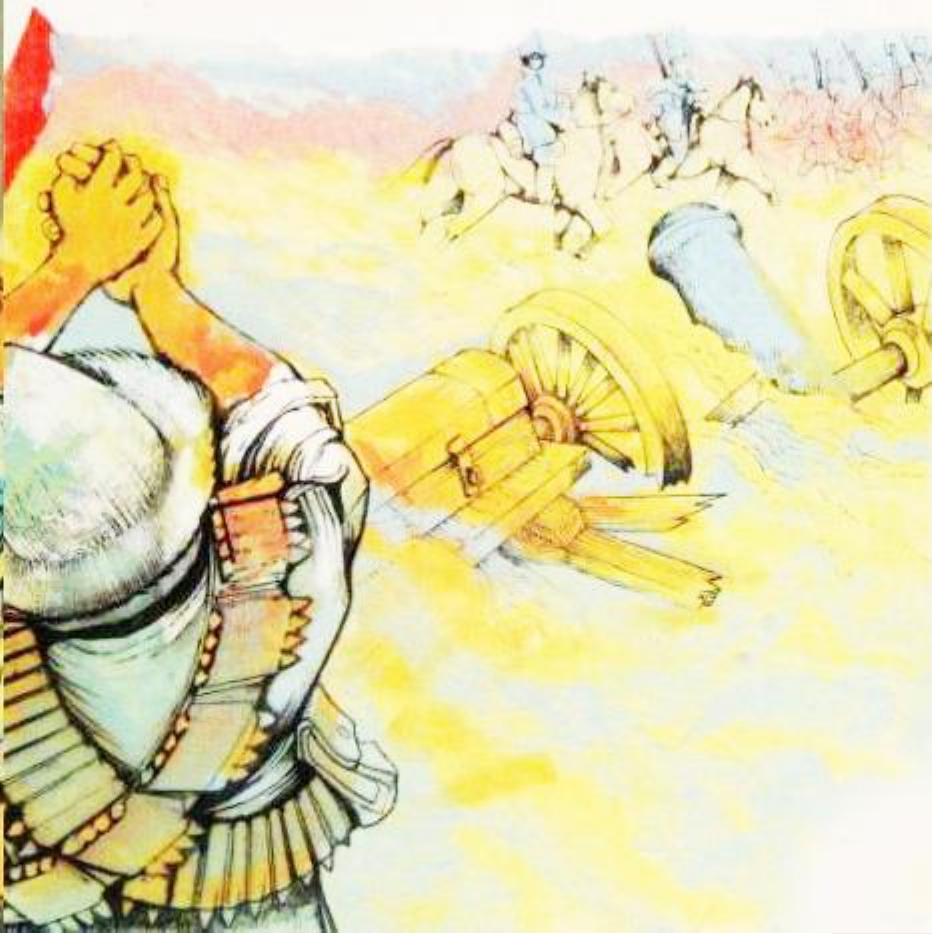

सिन्को डी मेयो की लड़ाई में पराजय की खबर सुनकर फ्रांसीसी सम्राट को बहुत गुस्सा आया. उसने 30,000 अतिरिक्त सैनिक, मेक्सिको भेजे. जल्द ही, फ्रांसीसी सेना ने मेक्सिको सिटी पर कब्जा कर लिया.

राष्ट्रपति जुआरेज को शहर से भागना पड़ा. लेकिन उन्होंने तब तक इंतजार किया जब तक मैक्सिकन झंडा नीचे नहीं आया. जैसे ही झंडा नीचे उतरा एक बैंड ने मैक्सिकन राष्ट्रगीत बजाया.

राष्ट्रपति जुआरेज ने झंडे को अपने हाथों में लिया और उसे चूमा. "विवा! (चिरायु) मेक्सिको" उन्होंने कहा. उसके बाद बेनितो जुआरेज दूर पहाड़ियों में चले गए.

फ्रांस ने पांच साल तक मेक्सिको पर शासन किया. लेकिन बेनिटो जुआरेज़ और अन्य मैक्सिकन नेता लड़ते रहे. अक्सर, उन्हें पकड़ने से बचने के लिए छिपना पड़ता था, लेकिन उन्होंने कभी हार नहीं मानी.

अंत में, 1867 में, वे जीत गए. फिर फ्रांसीसी चले गए. मेक्सिको फिर से आजाद हुआ. उस समय से अब तक किसी अन्य देश ने, मेक्सिको पर शासन नहीं किया है.

राष्ट्रपति जुआरेज़ वापस मेक्सिको सिटी में आए. उन्होंने दुबारा शहर के ऊपर मैक्सिकन झंडा फहराया. विवा! (चिरायु) मेक्सिको! वो चिल्लाए.

विवा! (चिरायु) मेक्सिको, विवा! (चिरायु) जुआरेज! लोग चिल्लाए.

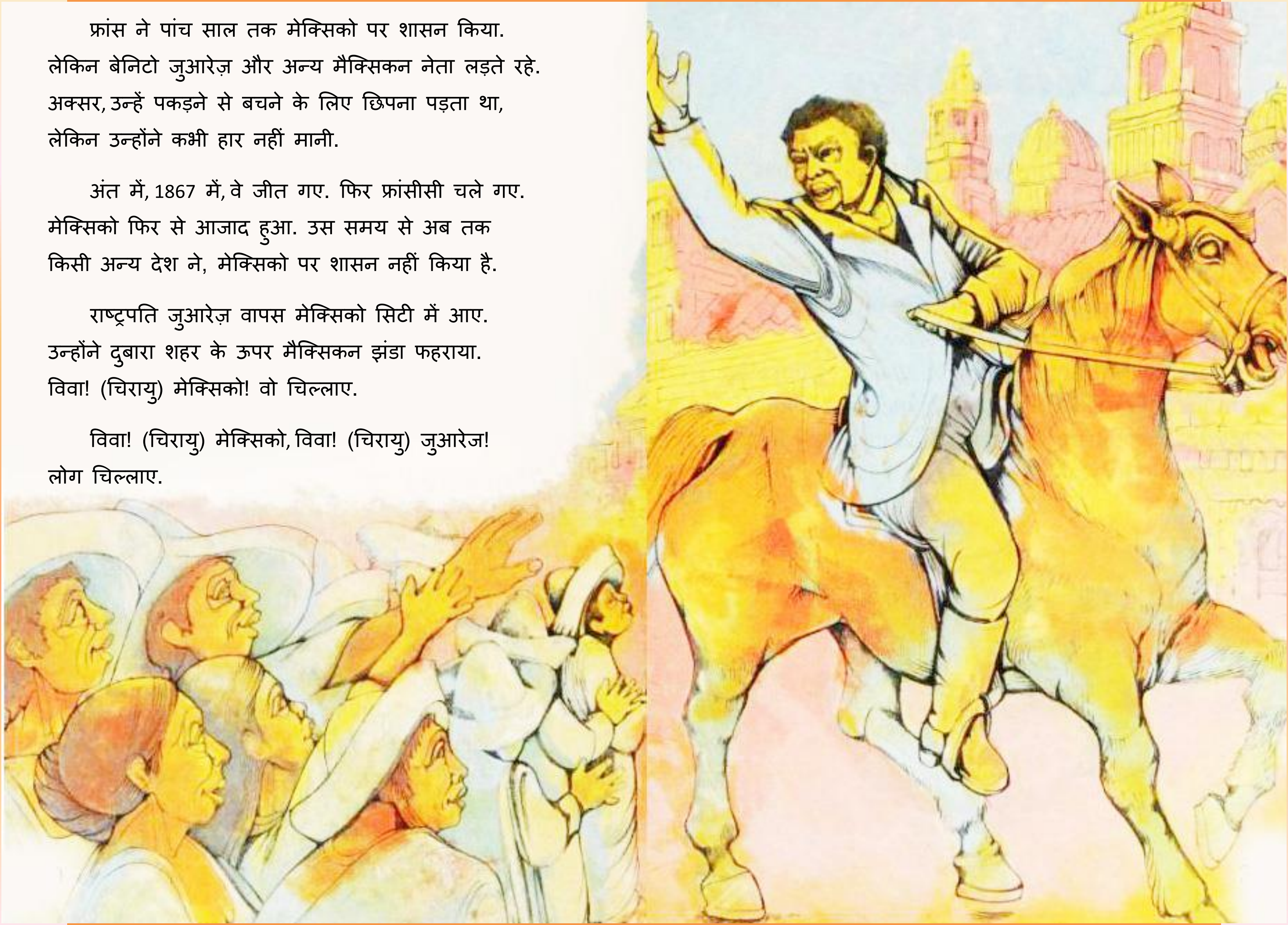

पांच मई

हर देश में विशेष छुट्टियां होती हैं. कुछ छुट्टियां ऐसे लोगों का जन्मदिन मनाती हैं जिन्होंने देश की बहुत मदद की थी. कुछ छुट्टियां देश के इतिहास में महत्वपूर्ण तिथियों को चिह्नित करती हैं.

"सिन्को डे मेयो" Cinco de Mayo—पांच मई— को मैक्सिकन लोग छुट्टी मनाते हैं. इस छुट्टी पर, वे पुएब्ला की लड़ाई को याद करते हैं. वे उन बहादुर लड़ाकों को याद करते हैं जिन्होंने फ्रांस की सेनाओं के खिलाफ जीत हासिल की थी. वे अपने उन हीरो का सम्मान करते हैं जिन्होंने मेक्सिको को एक बार फिर मुक्त होने में मदद की थी. इन नायकों में से एक बेनिटो जुआरेज़ भी थे.